ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

समस्त जन कल्याणे निरतं करुणामयम्।
नमामि चिन्मयं देवं सद्गुरुं ब्रह्मविद्वरम्॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेच
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

श्री रामरक्षास्तोत्र

विनियोगः

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसIतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपाद्मासनस्थं पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ १

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥ २

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥ ३

रामरक्षा पठेत्प्राज्ञः पापघनीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥ ४

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥ ५

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥ ६

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः॥ ७

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृतः॥ ८

जानुनी सेतुकृपात्पादौ जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥ ९

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥ १०

पातालभूतलव्योमचारिणछद्मचारिणः।
नद्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥ ११

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥ १२

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥ १३

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्॥ १४

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥ १५

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः॥ १६

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकाविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥ १७

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ १८

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥ १९

आत्तसज्जधनुषाविक्षुस्पृशा-वक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा-वग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥ २०

संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः॥ २१

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः॥ २२

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः॥ २३

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः॥ २४

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः॥ २५

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थ करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतयनं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावाणिरम्॥ २६

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥ २७

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम राणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥ २८

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा स्मरामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥ २९

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥ ३०

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥ ३१

लोकभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥ ३२

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥ ३३

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ ३४

आपदामहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ ३५

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्॥ ३६

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥ ३७

राम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥ ३८

श्री राम-अष्टोत्तरशत-नामावलिः

१. ॐ श्रीरामाय नमः
२. ॐ रामभद्राय नमः
३. ॐ रामचन्द्राय नमः
४. ॐ शाश्वताय नमः
५. ॐ राजीवलोचनाय नमः
६. ॐ श्रीमते नमः
७. ॐ राजेन्द्राय नमः
८. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः
९. ॐ जानकी-वल्लभाय नमः
१०. ॐ जैत्राय नमः
११. ॐ जितामित्राय नमः
१२. ॐ जनार्दनाय नमः
१३. ॐ विश्वामित्र-प्रियाय नमः
१४. ॐ दान्ताय नमः
१५. ॐ शरणत्राण-तत्पराय नमः
१६. ॐ वालि-प्रमथनाय नमः
१७. ॐ वाग्मिने नमः
१८. ॐ सत्यवाचे नमः
१९. ॐ सत्यविक्रमाय नमः
२०. ॐ सत्यव्रताय नमः
२१. ॐ व्रतधराय नमः
२२. ॐ सदाहनुमदाश्रिताय नमः
२३. ॐ कौसलेयाय नमः
२४. ॐ खरध्वंसिने नमः
२५. ॐ विराधवधपण्डिताय नमः
२६. ॐ विभीषण-परित्रात्रे नमः
२७. ॐ हरकोदण्डखण्डनाय नमः
२८. ॐ सप्तताल-प्रभेत्त्रे नमः
२९. ॐ दशग्रीव-शिरोहराय नमः
३०. ॐ जामदग्न्य-महादर्पदलनाय नमः
३१. ॐ ताटकान्तकाय नमः
३२. ॐ वेदान्तसाराय नमः
३३. ॐ वेदात्मने नमः
३४. ॐ भवरोगस्य भेषजाय नमः
३५. ॐ दूषण-त्रिशिरहन्त्रे नमः
३६. ॐ त्रिमूर्तये नमः
३७. ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः
३८. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
३९. ॐ त्रिलोकात्मने नमः
४०. ॐ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः
४१. ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः
४२. ॐ धन्विने नमः
४३. ॐ दण्डकारण्य-कर्तनाय नमः
४४. ॐ अहल्याशाप-शमनाय नमः
४५. ॐ पितृ-भक्ताय नमः
४६. ॐ वरप्रदाय नमः
४७. ॐ जितेन्द्रियाय नमः
४८. ॐ जितक्रोधाय नमः
४९. ॐ जितामित्राय नमः
५०. ॐ जगद्गुरवे नमः
५१. ॐ ऋक्षवानरसङ्घातिने नमः
५२. ॐ चित्रकूट-समाश्रयाय नमः
५३. ॐ जयन्त-त्राण-वरदाय नमः
५४. ॐ सुमित्रापुत्र-सेविताय नमः
५५. ॐ सर्व-देवादि-देवाय नमः
५६. ॐ मृतवानर-जीविताय नमः
५७. ॐ मायामारीचहन्त्रे नमः
५८. ॐ महादेवाय नमः

५९. ॐ महाभुजाय नमः
६०. ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः
६१. ॐ सौम्याय नमः
६२. ॐ ब्रह्मण्याय नमः
६३. ॐ मुनिसंस्तुताय नमः
६४. ॐ महायोगिने नमः
६५. ॐ महोदराय नमः
६६. ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः
६७. ॐ सर्वपुण्याधिकफलाय नमः
६८. ॐ स्मृतसर्वाघ-नाशनाय नमः
६९. ॐ आदिपुरुषाय नमः
७०. ॐ परमपुरुषाय नमः
७१. ॐ महापुरुषाय नमः
७२. ॐ पुण्योदयाय नमः
७३. ॐ दयासाराय नमः
७४. ॐ पुराण-पुरुषोत्तमाय नमः
७५. ॐ स्मितवक्त्राय नमः
७६. ॐ मितभाषिणे नमः
७७. ॐ पूर्वभाषिणे नमः
७८. ॐ राघवाय नमः
७९. ॐ अनन्तगुण-गंभीराय नमः
८०. ॐ धीरोदात्त-गुणोत्तमाय नमः
८१. ॐ मायामानुष-चरित्राय नमः
८२. ॐ महादेवादि-पूजिताय नमः
८३. ॐ सेतुकृते नमः
८४. ॐ जितवाराशये नमः
८५. ॐ सर्वतीर्थमयाय नमः
८६. ॐ हरये नमः
८७. ॐ श्यामाङ्गाय नमः
८८. ॐ सुन्दराय नमः
८९. ॐ शूराय नमः
९०. ॐ पीतवाससे नमः
९१. ॐ धनुर्धराय नमः
९२. ॐ सर्वयज्ञाधिपाय नमः
९३. ॐ यज्वने नमः
९४. ॐ जरामरण-वर्जिताय नमः
९५. ॐ विभीषण-प्रतिष्ठात्रे नमः
९६. ॐ सर्वापगुण-वर्जिताय नमः
९७. ॐ परमात्मने नमः
९८. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः
९९. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
१००. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
१०१. ॐ परस्मै धाम्ने नमः
१०२. ॐ पराकाशाय नमः
१०३. ॐ परात्पराय नमः
१०४. ॐ परेशाय नमः
१०५. ॐ पारगाय नमः
१०६. ॐ पाराय नमः
१०७. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः
१०८. ॐ परस्मै नमः

इति श्री राम-अष्टोत्तरशत-नामावलिः

श्री राम जन्म (बालकाण्ड)

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा॥

सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना॥
गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा॥

बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा॥

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥ **दोहा १९१** ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥ **छन्द १** ॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥ **छन्द २** ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥ **छन्द ३** ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥ **छन्द ४** ॥

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥ **दोहा १९२** ॥

श्री राम राज्याभिषेक (उत्तरकाण्ड)

कृपासिंधु जब मन्दिर गए। पुर नर नारि सुखी सब भए॥
गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई। आजु सुघरी सुदिन समुदाई॥

सब द्विज देहु हरषि अनुसासन। रामचन्द्र बैठहिं सिंघासन॥
मुनि बसिष्ट के बचन सुहाए। सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाए॥

कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका। जग अभिराम राम अभिषेका॥
अब मुनिबर बिलंब नहिं कीजै। महाराज कहँ तिलक करीजै॥

तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरषाइ।
रथ अनेक बहु बाजि गज तुरत सँवारे जाइ॥ **दोहा** ॥

जहँ तहँ धावन पठइ पुनि मंगल द्रब्य मगाइ।
हरष समेत बसिष्ट पद पुनि सिरु नायउ आइ॥ **दोहा** ॥

सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद।
चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद॥ **दोहा** ॥

प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिब्य सिंघासन मागा॥
रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥

जनकसुता समेत रघुराई। पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई॥
बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे। नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे॥

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥
सुत बिलोकि हरषीं महतारी। बार बार आरती उतारी॥

बिप्रन्ह दान बिबिधि बिधि दीन्हे। जाचक सकल अजाचक कीन्हे॥
सिंघासन पर त्रिभुअन साईं। देखि सुरन्ह दुंदुभीं बजाई॥

नभ दुंदुभी बाजहिं बिपुल गंधर्ब किंनर गावहीं।
नाचहिं अपछरा बृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादि समेत ते।
गहें छत्र चामर ब्यजन धनु असि चर्म सक्ति बिराजते॥ **छन्द १** ॥

श्री सहित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे।
अंभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखंति जे॥ **छन्द २** ॥

वह सोभा समाज सुख कहत न बनइ खगेस।
बरनहिं सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस॥ **दोहा** ॥

शिवजी द्वारा स्तुति (उत्तरकाण्ड)

बैनतेए सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर।
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥ **दोहा** ॥

जय राम रमा रमनं समनं। भव ताप भयाकुल पाहि जनं।
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो॥ **छन्द १ ॥**

दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा।
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥ **छन्द २** ॥

महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं।
मद मोह महा ममता रजनी। तप पुंज दिवाकर तेज अनी॥ **छन्द ३** ॥

मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए।
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे॥ **छन्द ४** ॥

बहु रोग बियोगिन्ह लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥ **छन्द ५** ॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥ **छन्द ६** ॥

नहिं राग न लोभ न मान मदा। तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा।
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥ **छन्द ७** ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ। पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ।
सम मानि निरादर आदरही। सब संत सुखी बिचरंति मही॥ **छन्द ८** ॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे।
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी॥ **छन्द ९** ॥

गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं।
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीनजनं॥ **छन्द १०** ॥

बार बार बर मागउँ हरषि देउ श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥ **दोहा** ॥

Conclusion

राम आरति rāma ārati

मङ्गल आरति सियरघुवर की दशरथ-नन्दन जनकसुता की
भरत-लछिमन रिपुसूदनकी रघुवर अतिप्रिय पवनतनयकी ॥ १

मङ्गल मातुपिता गुरुजन की सुन्दर अवधपुरी सरजूकी
सेवक साधु सखा पुरजन की जनहित निरत सदा रघुपति की ॥ २

मङ्गल नितनयी रामकथा की रामनाम जनजीवन धनकी
मधुर मनोहर मन भावन की प्रीति सीयरघुवर चरनन की ॥ ३

मङ्गल आराधन साधनकी सम जम नियम ज्ञान निर्मलकी
मङ्गल आरति तुलसीदासकी राम हृदय अति कोमल चितकी ॥ ४

श्री चिन्मय आरती

आरती श्री चिन्मय सद्गुरु की
दिव्य रूप मूरति करुणा की । (२) आरती सद्गुरु की...

चरणों में उनके शान्ति समाए
शरणागत की भ्रान्ति मिटाए
पाप ताप सन्ताप हरण की। आरती सद्गुरु की...

वेद उपनिषद् गीता को गाया
धर्म सनातन फिरसे जगाया
शुद्ध नीति प्रीति शङ्कर की। आरती सद्गुरु की...

सिद्धबाडि कि तपो भूमि में
नित्य विराजे गुरु हमारे
भक्तहृदय आनन्द स्रोत की। आरती सद्गुरु की...

a. न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तम् अनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

b. ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमाही तन्नो विष्णु प्रचोदयत

c. ॐ श्री महादेव्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्॥

d. ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

e. ॐ एकदन्ताय विद्धमहे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ति प्रचोदयात्॥

f. ॐ दाशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमही तन्नो रामः प्रचोदयात्॥

g. ॐ आञ्जनेयाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत् प्रचोदयात्॥

h. ॐ सद्गुरुदेवाय विद्महे। परब्रह्मणे धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥

om saha nā-bhavatu saha nau bhunaktu saha vīryam karavāvahai
tejasvināvadhītamastu mā vidviṣāvahai
om śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ

samasta jana kalyāṇe niratam karuṇāmayam
namāmi cinmayam devam sadgurum brahmavidvaram

tvameva mātā ca pitā tvameva
tvameva bandhuśca sakhā tvameva
tvameva vidyā draviṇam tvameva
tvameva sarvam mama deva deva

śīr rāmarakṣāsftotra

viniyogaḥ

asya śrīrakṣāstotramantrasya budhakauśikaṛṣiḥ śrīsītārācandro devatā anuṣṭupa chandaḥ sītā śaktiḥ śrīmān hanumān kīlakam śrīrāmacandraprītyarthe rāmarakṣtotrajape viniyogaḥ

dhyānam

dhyāyedājānubāhum dhṛtaśaradhanuṣam baddhapādmāsanastham
pītam vāsovsānam navakamala dalaspardhinetram prasannam
vāmāṅkaārūḍhasītāmukhakamalamilallocanam nīradābham
nānālaṅkāradīpatam dadhatamurujaṭāmaṇḍalam rāmacandram

stotram

caritam raghunāthasya śatakoṭipravistaram
ekaikamakṣaram puṁsām mahāpātakam 1

dhyātvā nīlotpalaśyāmam rājīvalocanam
jānakīlakṣamaṇopetam jaṭāmukuṭamaṇḍitam 2

sāsitūṇadhanurbāṇapāṇim naktamcarāntakam
svalīlayājagattrātumāvirbhūtamajam vibhum 3

rāmarakṣā paṭhetprājñaḥ pāpaghanīm sarvakādām
śirome rāghavaḥ pātu bhālam daśarathātmajaḥ 4

kausalyeyo dṛṣau pātu viśvāmitrapriyaḥ śrutī
ghrāṇam pātu makhatrātā mukham saumitravatsalaḥ 5

jihvām vidyānidhiḥ pātu kaṇṭham bharatavanditaḥ
skandhau divyāyudhaḥ pātu bhujau bhagneśakārmukaḥ 6

karau sītāpatiḥ pātu hṛadayam jāmadagnyajit
madhyam pātu kharadhvaṁsī nābhim jāmbavadāśrayaḥ 7

sugrīveśaḥ kaṭī pātu sakthinī hanumatprabhuḥ
ūrū raghūtamaḥ pātu rakṣaḥkulavināśakṛtaḥ 8

jānunī setukṛpātpādau jaṅghe daśamukhāntakaḥ
pādau vibhīṣaṇaśrīdaḥ pātu rāmo'khilam vapuḥ 9

etām rābabalopetām rakṣām yaḥ sukṛtī paṭhet
sa cirāyuḥ sukhī putrī vijayī vinayī bhavet 10

pātālabhūtalavyomacāriṇachadmacāriṇaḥ
nadraṣṭumapi śaktaste rakṣitam rāmanāmābhiḥ 11

rāmeti rāmabhadreti rāmacandreti vā smaran
naro na lipyate pāpairbhuktim muktim ca vindati 12

jagajjaitraikamantreṇa rāmanāmnābhirakṣitam
yaḥ kaṇṭhe dhārayettasya karasthāḥ sarvasiddhayaḥ 13

vajrapañjaranāmedam yo rāmakacam smaret
avyāhatājñaḥ sarvatra labhate jayamaṅgalam 14

ādiṣṭavānythā svapne rāmarakṣāmimām harḥ
tathā likhitavānprātaḥ prabuddho budhakauśikaḥ 15

ārāmaḥ kalpavṛkṣāṇām virāmaḥ sakalāpdām
abhirāmastrilokānām rāmaḥ śrīmansa naḥ prabhuḥ 16

taruṇau rūpasampannau sukumārau mahābalau
puṇḍarīkāviśālākṣau cīrakṛṣṇājināmbarau 17

phalamūlāśinau dāntau tāpasau brahmacāriṇau
putrau daśarathasyaitau bhrātarau rāmalakṣamaṇau 18

śaraṇyau sarvasattvānām śreṣṭhau sarvadhanuṣmatām
rakṣaḥnihantārau trāyetām no raghūttamau 19

āttasajjadhanuṣāvikṣusfpṛśā-vakṣayāśuganiṣaṅgasaṅginau
rakṣaṇāya mama rāmalakṣamaṇā-vagrtaḥ pathi sadaiva gacchatām 20

sannaddha kavacī khaṅgī cāpabāṇadharo yuvā
gacchanmanorathānnaśca rāmaḥ pātu salakṣamaṇaḥ 21

rāmo dāśarathiḥ śūro lakṣmaṇānucaro balī
kākutsthaḥ puruṣaḥ pūrṇaḥ kausalyeyo raghūttamaḥ 22

vdāntavedyo yajñeśaḥ purāṇapuruṣottamaḥ
jānakīvallabhaḥ śrīmānaprameyaparākramaḥ 23

ityetānijapannityam madbhaktaḥ śraddhayānvitaḥ
aśvamedhādhikam puṇyam samprapnoti ba saṁśayaḥ 24

rāmam dūrvādalaśyāmam padmākṣam pītavāsam
stuvanti nāmabhirdivyairna saṁsāriṇo narāḥ 25

rāmam lakṣamaṇapūrvajambraghuvaram sītāpatim sundaram
kākutstha karuṇārṇavam guṇanidhim viprapriyam dhārmikam
rājendram satyasandha daśarathatayanam śāmalam śāntamūrtim
vande lokābhirāmam raghukulatilakam rāghavam rāvaṇiram 26

rāmāya rāmabhadrāya rāmacandrāya vedhase
raghunāthāya nāthāya sītāyāḥ pataye namaḥ 27

śrīrāma rāma raghunandan rāma rāma
śrīrāma rāma bharatāgraja rāma rāma
śrīrāma rāma rāṇakarkaśa rāma rāma
śrīrāma rāma śaraṇam bhava rāma rāma 28

śrīrāmacandracaraṇau manasā smarāmi
śrirāmacandracaraṇau vcaasā smarāmi
śrīrāmacandracaraṇau śirasā namāmi
śrīrāmacandracaraṇau śaraṇam prapadye 29

mātā rāmo matpitā rāmacandraḥ
svāmī rāmo matsakhā rāmacandraḥ
sarvasva me rāmacandro dayālu
rnānyam jāne naiva jāne na jāne 30

dakṣiṇe lakṣamaṇo yasya vāme tu janakātmajā
purato mārutiryasya tam vande raghunandanam 31

lokābhirāmam raṇaraṅgadhīram rājīvanetram raghuvaṁśanātham
kāruṇyarūpam karuṇākaram tam śrīrāmacandram śaraṇam prapadye 32

manojavam mārutatulyavegam
jitendriyam buddhimatām variṣṭham
vātātmajam vānarayūthamukhyam
śrīrāmadūtam śirasā namāmi 33

kūjtam rāmarāmeti madhuram madhurākṣaram
āruhya kavitāśākhām vande vālmīkikokilam 34

āpadāmahartāram dātāram sarva sampadām
lokābhirāmam śrīrāmam bhūyo bhūyo nmāmyaham 35

bharjanam bhavabījānāmarjanam sukha sampadām
tarjanam yamadūtānam rāmarāmeti garjanam 36

rāmo rājamaṇiḥ sadā vijayate rāmam rāmam ramśam bhaje
rāmeṇābhihitā niśācaracamū rāmāya tasmai namaḥ
rānnāst parāyaṇam parataram rāmasya dāso'smyaham
rāme cittalayaḥ sadā bhavatu me bho rāma māmuddhara 37

rāma rāma rāmeti rame rāme manorame
sahasranāma tattulyam rāmanāma varānane 38

śrī rāma-aṣṭottaraśata-nāmāvaliḥ

1. om śrīrāmāya namaḥ
2. om rāmabhadrāya namaḥ
3. om rāmacandrāya namaḥ
4. om śāśvatāya namaḥ
5. om rājīvalocanāya namaḥ
6. om śrīmate namaḥ
7. om rājendrāya namaḥ
8. om raghupuṅgavāya namaḥ
9. om jānakī-vallabhāya namaḥ
10. om jaitrāya namaḥ
11. om jitāmitrāya namaḥ
12. om janārdanāya namaḥ
13. om viśvāmitra-priyāya namaḥ
14. om dāntāya namaḥ
15. om śaraṇatrāṇa-tatparāya namaḥ
16. om vāli-pramathanāya namaḥ
17. om vāgmine namaḥ
18. om satyavāce namaḥ
19. om satyavikramāya namaḥ
20. om satyavratāya namaḥ
21. om vratadharāya namaḥ
22. om sadā-hanumad-āśritāya namaḥ
23. om kausaleyāya namaḥ
24. om khara-dhvaṁsine namaḥ
25. om virādha-vadha-paṇḍitāya namaḥ
26. om vibhīṣaṇa-paritrātre namaḥ
27. om hara-kodaṇḍa-khaṇḍanāya namaḥ
28. om saptatāla-prabhettre namaḥ
29. om daśagrīva-śiroharāya namaḥ
30. om jāmadagnya-mahādarpa-dalanāya namaḥ
31. om tāṭakāntakāya namaḥ
32. om vedānta-sārāya namaḥ
33. om vedātmane namaḥ
34. om bhava-rogasya bheṣajāya namaḥ
35. om dūṣaṇa-triśira-hantre namaḥ

36. om trimūrtaye namaḥ
37. om triguṇātmakāya namaḥ
38. om trivikramāya namaḥ
39. om trilokātmane namaḥ
40. om puṇyacāritra-kīrtanāya namaḥ
41. om triloka-rakṣakāya namaḥ
42. om dhanvine namaḥ
43. om daṇḍakāraṇya-kartanāya namaḥ
44. om ahalyā-śāpa-śamanāya namaḥ
45. om pitṛ-bhaktāya namaḥ
46. om vara-pradāya namaḥ
47. om jitendriyāya namaḥ
48. om jita-krodhāya namaḥ
49. om jitāmitrāya namaḥ
50. om jagadgurave namaḥ
51. om ṛkṣavānara-saṅghātine namaḥ
52. om citrakūṭa-samāśrayāya namaḥ
53. om jayanta-trāṇa-varadāya namaḥ
54. om sumitrā-putra-sevitāya namaḥ
55. om sarva-devādi-devāya namaḥ
56. om mṛtavānara-jīvitāya namaḥ
57. om māyā-mārīca-hantre namaḥ
58. om mahādevāya namaḥ
59. om mahābhujāya namaḥ
60. om sarva-devastutāya namaḥ
61. om saumyāya namaḥ
62. om brahmaṇyāya namaḥ
63. om muni-saṁstutāya namaḥ
64. om mahā-yogine namaḥ
65. om mahodarāya namaḥ
66. om sugrīvepsita-rājyadāya namaḥ
67. om sarva-puṇyādhika-phalāya namaḥ
68. om smṛta-sarvāgha-nāśanāya namaḥ
69. om ādi-puruṣāya namaḥ
70. om parama-puruṣāya namaḥ
71. om mahā-puruṣāya namaḥ
72. om puṇyodayāya namaḥ
73. om dayā-sārāya namaḥ

74. om purāṇa-puruṣottamāya namaḥ
75. om smita-vaktrāya namaḥ
76. om mita-bhāṣiṇe namaḥ
77. om pūrva-bhāṣiṇe namaḥ
78. om rāghavāya namaḥ
79. om anantaguṇa-gaṁbhīrāya namaḥ
80. om dhīrodātta-guṇottamāya namaḥ
81. om māyā-mānuṣa-caritrāya namaḥ
82. om mahā-devādi-pūjitāya namaḥ
83. om setukṛte namaḥ
84. om jitavārāśaye namaḥ
85. om sarva-tīrthamayāya namaḥ
86. om haraye namaḥ
87. om śyāmāṅgāya namaḥ
88. om sundarāya namaḥ
89. om śūrāya namaḥ
90. om pīta-vāsase namaḥ
91. om dhanurdharāya namaḥ
92. om sarva-yajñādhipāya namaḥ
93. om yajvane namaḥ
94. om jarāmaraṇa-varjitāya namaḥ
95. om vibhīṣaṇa-pratiṣṭhātre namaḥ
96. om sarvāpaguṇa-varjitāya namaḥ
97. om paramātmane namaḥ
98. om parasmai brahmaṇe namaḥ
99. om saccidānanda-vigrahāya namaḥ
100. om parasmai jyotiṣe namaḥ
101. om parasmai dhāmne namaḥ
102. om parākāśāya namaḥ
103. om parātparāya namaḥ
104. om pareśāya namaḥ
105. om pāragāya namaḥ
106. om pārāya namaḥ
107. om sarva-devātmakāya namaḥ
108. om parasmai namaḥ

iti śrī rāma-aṣṭottaraśata-nāmāvaliḥ

Shri Rāma Janma (Bālakāṇḍa)

naumī tithi madhumāsa punītā, sukala paccha abhijita hariprītā
madhyadivasa ati sīta na ghāmā, pāvana kāla loka biśrāmā

sītala manda surabhi baha bāū, haraṣita sura santana mana cāū
bana kusumita girigana maniārā, sravahi sakala saritā'mṛtadhārā

so avasara biranci jaba jānā, cale sakala sura sāji bimānā
gagana bimala sankula sura jūthā, gāvahi guna gandharba barūthā

baraṣahi sumana suanjuli sājī, gahagahi gagana dundubhī bājī
astuti karahi nāga muni devā, bahubidhi lāvahi nija nija sevā

sura samūha binatī kari pahuce nija nija dhāma
jaganivāsa prabhu pragaṭe akhila loka biśrāma doha 191

bhae pragaṭa kṛpālā dīnadayālā kausalyā hitakārī
haraṣita mahatārī muni mana hārī adbhuta rūpa bicārī
locana abhirāmā tanu ghanasyāmā nija āyudha bhuja cārī
bhūṣana banamālā nayana bisālā sobhāsindhu kharārī 1

kaha duī kara jorī astuti torī kehi bidhi karau anantā
māyā guna gyānātīta amānā beda purāna bhanantā
karunā sukha sāgara saba guna āgara jehi gāvahi śruti santā
so mama hita lāgī jana anurāgī bhayau prakaṭa śrīkantā 2

brahmāṇḍa nikāyā nirmita māyā roma roma prati beda kahai
mama ura so bāsī yaha upahāsī sunata dhīra mati thira na rahai
upajā jaba gyānā prabhu musukānā carita bahuta bidhi kīnha cahai
kahi kathā suhāī mātu bujhāī jehi prakāra suta prema lahai 3

mātā puni bolī so mati ḍolī tajahu tāta yaha rūpā
kijai sisulīlā ati priyasīlā yaha sukha parama anūpā
suni bacana sujānā rodana ṭhānā hoi bālaka surabhūpā
yaha carita je gāvahi haripada pāvahi te na parahi bhavakūpā 4

bipra dhenu sura santa hita līnha manuja avatāra
nija icchā nirmita tanu māyā guna go pāra doha 192

Shri Rāma Rājyābhisheka (Uttarakāṇḍa)

kṛpāsindhu jaba mandira gae, pura nara nāri sukhī saba bhae
gur basiṣṭa dvija lie bulāī, āju sugharī sudina samudāī

saba dvija dehu haraṣi anusāsana, rāmacandra baiṭhahin siṅghāsana
muni bsiṣṭa ke bacana suhāe, sunata sakala bipranha ati bhāe

kahahin bacana mṛdu bipra anekā, jaga abhirāma rāma abhiṣekā
aba munibara bilamba nahin kījai, mhārāja kahan tilaka karījai

taba muni kaheu sumantra sana sunata caleu haraṣāi
ratha aneka bahu bāji gaja turata savāṁre jāi doha

jahaṁ tahaṁ dhāvana paṭhai puni maṅgala drabya magāi
haraṣa sameta basiṣṭa pada puni siru nāyau āi doha

sunu khagesa tehi avasara brahmā siva muni bṛnda
caḍhi bimāna āe saba sura dekhana sukha kanda doha 11(ga))

prabhu biloki muni mana anurāgā, turata dibya siṅghāsana māgā
rabi sama teja so barani na jāī, baiṭhe rāma dvijanha siru nāī

janakasutā sameta raghurāī, pekhi praharaṣe muni samudāī
beda mantra taba dvijanha ucāre, nabha sura muni jaya jayati pukāre

prathama tilaka basiṣṭa muni kīnhā, puni saba bipranha āyasu dīnhā
suta biloki haraṣī mahatārī, bāra bāra āratī utārī
bipranha dāna bibidhi bidhi dīnhe, jācaka sakala ajācaka kīnhe
siṅghāsana para tribhuvana sāī, dekhi suranha dundubhī bajāī

nabha dundubhī bājahi bipula gandarbha kinnara gāvahī
nācahi apachharā bṛnda paramānanda sura muni pāvahī
bharatādi anuja bibhīṣanāṅgada hanumadādi sameta te
gahe chhatra cāmara byajana dhanu asi carma sakti birājate 1

śrī sahita dinakara bansa bhūṣana kāma bahu chhabi sohaī
nava ambudhara bara gāta ambara pīta sura mana mohaī
mukuṭāṅgadādi bicitra bhūṣana aṅga aṅganhi prati saje
ambhoja nayana bisāla ura bhuja dhaanya nara nirakhanti je 2

vaha sobha samāja sukha kahata na bnai khagesa
baranahi sārada seṣa śruti so rasa jāna mahesa doha

Stuti by Shivji

bainateya sunu sambhu taba āe jaha raghubīra
binaya karata gadagada girā pūrita pulaka sarīra doha

jaya rāma ramā ramanam samanam, bhava tāpa bhayākula pāhi janam
avadhesa suresa mahesa bibho, saranāgata māgata pāhi prabho 1

dasasīsa bināsana bīsa bhujā, kṛta dūri mahā mahi bhūri bhujā
rajanīcara bṛnda pataṅga rahe, sara pāvaka teja pracaṇḍa dahe 2

mahi maṇḍala maṇḍana cārutaram, dhṛta sāyaka cāpa niṣaṅga baram
mada moha mahā mamatā rajanī, tapa punja divākara teja anī 3

manajāta kirāta nipāta kiye, mṛga loga kubhoga sarena hiye
hati nātha anāthani pāhi hare, biṣayā bana pāvara bhūli pare 4

nahi rāga na lobha na māna madā, tinha ke sama baibhava vā bipadā
ehi te tava sevaka hota mudā, muni tyāgata joga bharosa sadā 5

kari prema nirantara nema liye, pada paṅkaja sevata suddha hiye
sama māni nirādara ādarahī, saba santa sukhī bicaranti mahī 6

muni mānasa paṅkaja bhṛṅga bhaje, raghubīra mahā ranadhīra aje
tava nāma japāmi namāmi harī, bhava roga mahāgada māna arī 7

guna sīla kṛpā paramāyatanam, pranamāmi nirantara śrīramanam
raghunanda nikandaya dvandvaghanam, mahipāla bilokaya dīnajanam 8

bāra bāra bara māgau haraṣi deu śrīraṅga
pada saroja anapāyanī bhagati sadā satasaṅga doha

Conclusion

Shri Rama Arti

maṅgala ārati siyaraghuvara kī daśartha-nandana janakasutā kī
bharata-lachimana ripu-sūdanakī
raghuvara atipriya pavana-tanaya kī ‖ 1

maṅgala mātu-pitā gurujana kī sundara avadhapurī sarajū kī
sevaka sādhu sakhā purajana kī
janahita nirata sadā raghupati kī ‖ 2

maṅgala nitanayī rāmakathā kī rāmanāma janajīvana dhana kī
madhura manohara mana bhāvana kī
prīti sīya-raghuvara caranana kī ‖ 3

maṅgala ārādhana sādhana kī
sama jama niyama jñāna nirmala kī
maṅgala ārati tulasī-dāsa kī rāma hṛdaya ati komala cita kī ‖ 4

Composed by *Pujya Guruji Swami Tejomayananda*

Śrī Chinmaya Āratī

āratī Śrī Chinmaya sadguru kī
divya rūpa mūrati karuṇā kī ।(2) āratī Sadguru kī…

caraṇoṁ me unake śānti samāe
śaraṇāgata kī bhrānti miṭāe
pāpa tāpa santāpa haraṇa kī । āratī Sadguru kī…

veda upaniṣad gītā ko gāyā
dharma sanātana phirase jagāyā
śuddha nīti prīti Śaṅkara kī । āratī Sadguru kī…

Siddhabāḍi ki tapo bhūmi meiṁ
nitya virāje Guru hamāre
bhaktahṛdaya ānanda srota kī । āratī Sadguru kī…

na tatra sūryo bhāti na candratārakaṁ nemā vidyuto bhānti kuto'yamagniḥ |
tameva bhāntamanubhāti sarvaṁ tasya bhāsā sarvamidaṁ vibhāti ||

1. Om naaraayanaaya vidmahe vaasudevaaya dheemahi tanno vishnuh prachidayat
2. Om mahadevyai cha vidmahe vishnupatnyai cha dheemahi tanno lakshmi prachidayat
3. Om tatpurushaaya vidmahe mahaadevaaya dheemahi tanno rudrah prachidayat
4. Vakratundaya Dhimahi, Tanno Danti Prachodayat॥
5. Om Dāsharaathaaya Vidmahe Sitavallabhāya Dhimahi, Tanno Ramah Prachodayat॥
6. Om āñjaneyāya vidmahe vāyuputrāya dhīmahi tanno hanumat pracodayāt॥
7. Om Sadgurudevāya vidmahe, parabrahmane dhīmahi tanno guruḥ pracodayāt.